Chap-7

सप्तम अध्याय

उपसंहार

अपने शोध के अध्ययन से जो मैंने पाया हैं उसी का निष्कर्ष मैं यहाँ उपसंहार रूप में प्रस्तुत कर रही हूँ।

मानव व्यक्तित्व के विकास की अद्भुत गाथा हमारी भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर रही है, ज्यों मानव प्रकृति से प्रेरित हुआ त्यों–त्यों वह जीवन के सत्य की खोज में परब्रह्म परमात्मा की ओर अग्रसर हुआ। कालान्तर में आवश्यकता पड़ने पर मानव स्वयम् के अन्तर व बाह्य परिवेश में निरन्तर संशोधन व परिर्वतन करता हुआ मुख्यतः धार्मिक, सामाजिक रूप से आगे बढ़ता रहा है।

१. प्रथम अध्याय :

अपने शोध अध्ययन के प्रथम अध्याय में पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) की परिस्थितियों का अध्ययन करते हुए मैंने पाया कि इस काल में बड़े युगान्तकारी धार्मिक परिवर्तन हुए थे।

इसी काल में कुमारिल भट्टाचार्य और शंकराचार्य जैसे मनुष्यों ने श्रुति–स्मृति–पुराण प्रतिवादित 'हिन्दू धर्म' की नींव डाली थी। जिससे वेदानुकूल भागवत धर्म ने वैष्णव धर्म के नाम से नया कलेवर प्राप्त किया था। इसी काल की सबसे बड़ी घटना थी इस्लाम धर्म के अनुयायी विदेशियों का यहाँ पर आक्रमण करना और बल पूर्वक अपने इस्लामी धर्म का प्रचार करना। मूर्तिपूजा का विरोध करना, हिन्दू धर्म सम्प्रदायों की मूर्तियों को तोड़ना, मंदिर–देवालयों को नष्ट–भ्रष्ट करना। विदेशी मुसलमान शासकों ने जहाँ ब्रज की परम्परागत धार्मिक संस्कृति को समाप्त करने का क्रूरता पूर्ण प्रयास किया था उनकी इसी मज़हबी तानाशाही की चुनौती को वैष्णव धर्माचार्यो और उनके अनुगामी संतों तथा भक्तों ने बड़े साहस एवं धैर्य के साथ स्वीकार किया। इन महानुभाव वैष्णवाचार्यों ने सहृदय,

सहानुभूतिपूर्ण भक्ति मार्ग का निर्देशन किया, जिसके प्रतीक बने राम और कृष्ण। ऐसे धर्माचार्यों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है सर्व श्री रामानुजाचार्य, विष्णुस्वामी, निम्बार्काचार्य, माध्वाचार्य, रामानंद, वल्लभाचार्य, चैतन्य देव, हित हरिवंश, स्वामी हरिदास के नाम विशेष उल्लेखनीय है। राधा–कृष्ण की विविध ब्रज लीलाओं के साथ ही साथ रामोपासक रामानंदी सम्प्रदाय भी यहाँ फला–फूला।

अपने शोध अध्ययन से मैंने पाया कि इन सभी महात्माओं की अलौकिक क्षमावृति और मानव मात्र के प्रति उनकी समदृष्टि की भावना ने तत्कालीन ब्रज वासियों का मनोबल सुदृढ़ कर उनकी धार्मिक आस्था को जगाया। परिणामतः देश के कोने–कोने से अनेक कष्ट व कठिनाइयों का सामना कर लोग ब्रज की यात्रा को आने लगे और ब्रज में निवास करने लगे। ब्रज के इन सभी धर्म सम्प्रदायों और मतान्तरों का यथा सम्भव संक्षिप्त वृतान्त इस अध्याय में देने का मैंने प्रयास किया है।

अपने उपरोक्त अध्ययन से मैंने स्थापित किया है कि अपने युग विशेष के श्रेष्ठ भक्ताचार्य, दार्शनिक धर्माचार्य 'वल्लभाचार्य' अपने सभी पूर्व व तत्कालीन महात्माओं से अधिक आगे रहे हैं। वल्लभाचार्य ने अपने जीवन काल का आधे से अधिक भाग पृथ्वी परिक्रमा कर, समाज और जन–जीवन के जागरण में लगा दिया था। तत्कालीन सुलतान सिकंदर लोदी के अमानवीय आदेशों के विरूद्ध वल्लभाचार्य ने अहिंसात्मक संघर्ष किया और राजकीय आदेशो की सविनय अवज्ञा कर 'श्री नाथ जी' की सेवा के रूप में मूर्ति पूजा का व्यवधान बनाया, मंदिर निर्माण पर कठोर पाबन्दी होते हुए भी निर्भय होकर पुरनमल खत्री द्वारा गोवर्धन पर श्री नाथ जी का मंदिर बनवाया था। वल्लभाचार्य भगवद् प्रेम संदेश वाहक थे, व्यक्तिगत भक्ति के माध्यम से घर, परिवार को तो ईश्वर का शान्तिमय प्रेम मंदिर बना दिया पर साथ ही समाज और राष्ट्र को भी मंगलमय भगवद् धाम बना दिया। वल्लभाचार्य ने अपने भक्तिमार्ग पुष्टिमार्ग के माध्यम से साधारण जन जीवन, जन मानस के राग–भोग इत्यादि को प्रभु सेवा में नियोजित कर धार्मिक, आत्मिक,

अध्यात्मिक, सामाजिक सभी ओर से सबकी उन्नति की प्रशस्ति की। वल्लभाचार्य वैष्णवाचार्य की परम्परा के अन्तिम आचार्य थे जो अत्यन्त उच्चकोटि के तत्ववेता, धर्म शास्त्र के मर्मज्ञ व्याख्याता व भारत वर्ष के प्रथम पंक्ति के दार्शनिक धुरंधर विद्वानाचार्य थे; जो दार्शनिक क्षेत्र में 'शुद्धा द्वैत वाद' तथा व्यवहारिक क्षेत्र में 'वल्लभ सम्प्रदाय (पुष्टिमार्ग)' नामक प्रेम मय भक्ति सम्प्रदाय द्वारा भारतीय समाज, संस्कृति को नई उज्जवल प्रकाशित दिशा चिरकाल तक दे गए।

अतः यही कहना चाहुँगी कि तत्कालीन सुलतानी तानाशाही के माहौल में, उस काल की विषम धार्मिक परिस्थितियों में भी मानवाधिकारों के लिए संघर्ष करने वाले उपरोक्त सभी महानुभावों के सहृदय साहस व धैर्य की कहा तक प्रशंसा करू।

२. द्वितीय अध्याय :

अपने शोध अध्ययन के द्वितीय अध्याय में पुष्टिमार्ग का विस्तृत परिचय देते हुए मैंने पाया है कि पुष्टि सम्प्रदाय में पुष्टि–अनुग्रहात्मक आत्मनिवेदन द्वारा प्रेम स्वरूप सगुण भक्ति पर प्रकाश डाला गया है। 'पुष्टि' भगवान की वह शक्ति है जिससे मन, भाव, इन्द्रियादि सब भगवद् पोषण से ही पुष्ट होते है। भारतीय धर्माचार्यो ने कर्म, ज्ञान और भक्ति को मोक्ष प्राप्ति का साधन बताया है। वल्लभाचार्य ने अपने पुष्टि सम्प्रदाय में भक्ति को प्रधानता दी है। पुष्टिमार्ग युगानुकुल परिस्थितियों में समाज को धारण करने वाला व पोषण देने वाला प्रशस्त मार्ग रहा है। पुष्टिमार्ग प्रेम भावना प्रधान मार्ग है जहाँ भक्ति की प्राप्ति भगवान् के विशेष अनुग्रह से, कृपा से ही सम्भव होती है। किसी भी धर्म या सम्प्रदाय के पालन के लिए यह आवश्यक है कि उसके प्रति पूर्ण आस्था और श्रद्धा होनी चाहिए। पुष्टिमार्ग का साधक अपने को भगवान के चरणों में समर्पित कर देता है

और भगवद् अनुग्रह से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों को सिद्ध कर लेता है।

पुष्टिमार्ग की शिक्षा है कि सांसारिक राग, भोग और शृंगार की भावना को भगवान की ओर मोड़ के उसका उन्नयन और परिष्कार करें। मनुष्य की भौतिक दुनिया जगत्–संसार है और आध्यात्मिक दुनिया ब्रह्म है। मानव की अपनी मानसिक वृतियों के विकास के द्वारा जगत से ब्रह्म तक पहुँचने का मार्ग पुष्टिमार्ग सगुम व सरल बना देता है। मानव की भौतिक–सांसारिक वासना–की प्रवृति का सहज में भगवद् विनियोग करना पुष्टिमार्ग की अपनी विशिष्टता है। यथा सर्वस्व समर्पित कर पूर्ण शरणागति की भावना ही पुष्टिमार्ग की पुण्य प्रेरणा है जिसने मानव जीवन के यथार्थों को प्रभु सेवा में जोड़ कर मनुष्य को अपने परम लक्ष्य की प्राप्ति, परब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति का सर्वोच्च मार्ग बनाया है। पुष्टिमार्ग के द्वारा अखिल विश्व के सभी प्राणीयों के लिए खुले है। पुष्टिमार्ग का प्रचार जीव मात्र के कल्याण के लिए वल्लभाचार्य द्वारा आरम्भ हुआ था। इन जीवों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, स्त्री, राजा–रक, पुण्यात्म–दुष्यात्मा, सभी वर्ण, वर्ग और प्रकृति विशेष के व्यक्तियों का समावेश होता है। यही नहीं पशु–पक्षी, जीव–जन्तु आदि का भी उद्धार पुष्टिमार्ग में होता है जिसके उदाहरण हमें पुष्टिमार्गीय वार्ता साहित्य में मिलते है।

पुष्टिमार्ग में भगवान श्री कृष्ण को परब्रह्म परम आराध्य देव माना गया है। पुष्टिमार्ग के सेव्य स्वरूप 'श्री नाथ जी' साक्षात् श्री कृष्ण भगवान का स्वरूप माने गऐ है, जिनका प्राकट्य ब्रज के अन्तर्गत गोवर्धन ग्राम की गिरिराज पहाड़ी पर हुआ था। श्री नाथ जी का स्वरूप श्री कृष्ण के गोवर्धन धारण करने के भाव का है, अतः श्री नाथ जी को 'श्री गिरिरारज गोवर्धन नाथ जी' भी कहा जाता है। साथ ही श्री कृष्ण से संबंधिंत गिरिराज, यमुना, अष्टसखा इत्यादि की उपासना भी पुष्टिमार्ग में अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है।

पुष्टिमार्ग में ब्रह्म संबंध की दीक्षा का व्यवधान है। संसार की अहंता–ममता त्याग कर परब्रह्म श्री कृष्ण के चरणों में अपना सर्वस्व समर्पण कर दीनता पूर्वक उनका अनुग्रह प्राप्त करने को ब्रह्म संबंध कहते है। ब्रह्म संबंध द्वारा सभी जीवों को आत्मा के एक सुत्र में बाँध कर समाज को स्थिर कर सफल शान्ति युक्त तथा सद्भावना मय बनाने का पथ पुष्टिमार्ग की अग्रणी विशेषता है। सभी जाति वर्ण–वर्ग आदि के मनुष्य अपनी–अपनी योग्यता और मानसिकता के आधार पर तनुजा, वितजा व मानसी सेवा करने के अधिकारी है मुस्लिम समाज भी पुष्टिमार्ग में भगवद् सेवा करता है। भारत के विभिन्न भक्ति मार्गों के देवालयों में पूजा का व्यवधान है जबकि पुष्टिमार्ग में सेवा की जाती है। सेवा जो शुद्ध स्नेहात्मक भाव से की जाती हैं, जबकि पूजा शास्त्रोक्त विधि–विधान अनुसार की जाती है। पुष्टिमार्ग में नंदालय की भावना से माता यशोदा के भाव से बालकृष्ण की सेवा की जाती है क्योंकि वात्सल्य भाव सबसे निर्मल और पवित्रभाव माना जाता है। इस भगवद् सेवा के दो क्रम है नित्य सेवा और वर्षोत्सव सेवा। नित्य सेवा में मंगला, शृंगार, ग्वाल, राजभोग, उत्थापन, भोग, संध्या आरती और शयन की आठ झाँकियों का उल्लेख है तथा वर्षोत्सव सेवा में सम्प्रदाय के अन्तर्गत मनाये जाने वाले छः ऋतुओं के उत्सवों की विशेष सेवा का उल्लेख है। शृंगार, राग, भोग प्रकार की पुष्टिमार्गीय सेवा गृहस्थ में रहता हुआ व्यक्ति भी अपने परिवार, समाज, राष्ट्र व मानव जाति के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह करता हुआ, जीवन मुक्त हो सकता है।

पुष्टिमार्ग ने ललित कलाओं द्वारा भक्ति और अध्यात्म की आराधना का मार्ग प्रशस्त किया है। कला अपने अलौकिक रूप में बिना किसी भेद–भाव के समस्त मानव को समान रूप से सुनाती है। जीवन में जितनी भी कलाएँ है वे उन्ही सौन्दर्य के निधि और रस के समुद्र प्रभु श्री कृष्ण को रिझाने के लिए ही है, अतः पुष्टिमार्ग ने कला के इसी सेवा उपयोगी स्वरूप से भगवान एवं समाज की समान रूप से सेवा करने की प्रेरणा प्रदान की है। पुष्टिमार्गीय कला शैली में मुख्यतः उत्तर भारत (ब्रज), राजस्थान, गुजरातादी अन्य कला शैलियों का मंजुल सामंजस्य

देखने को मिलता है। कालान्तर में गुसाँई विट्ठलनाथ जी ने श्री नाथ जी की सेवा व्यवस्था की उन्नति के साथ ही साथ सम्प्रदाय के कवियों, गायकों, संगीतज्ञों, वाद्य–विशेषज्ञों, चित्रकारों, पाक शास्त्रियों एवं अन्य कला विद्या का संगठन कर; उनकी कलाओं द्वारा सम्प्रदाय की, मानव मात्र की उन्नति का, भक्ति–आध्यात्म का मनोरम मंगलकारी मार्ग प्रशस्त किया है।

अन्तः यही केहना चाहुँगी पुष्टिमार्ग मानव जीवन की समस्त सत्य–शिव–सुन्दर भावनाओं को भगवान में अर्पित कराकर उनके सदुपयोग करने का मार्ग दिखलाता है। पुष्टिमार्ग कृष्ण प्रेममयी गोपियों का, ब्रजांगनाओं का मार्ग है, गोपियाँ शुद्ध प्रेम की ध्वजा है प्रेम मार्ग की गुरु है। हिन्दू समाज की सुरक्षा, समुत्थान, संस्कृति व सुधर्म के लिए पुष्टिमार्ग की यह अमूल्य देन है जो वस्तुतः अद्वितीय और अपूर्व है। पुष्टिमार्ग द्वारा ही सुख–शान्ति का परम लक्ष्य हमारे आत्म कल्याण का मार्ग है जिसे आज तक भारतीय परम्परा ने अपने आंचल में सम्भाल कर रखा है। वल्लभाचार्य जी की तपस्या और त्याग पुष्टिमार्गीय सम्प्रदाय की आधार शिला है, जो विश्व मान्य मानव धर्म का सर्वश्रेष्ठ सजीव एवं सरस रूप है।

३. तृतीय अध्याय :

अपने शोध प्रबन्ध के तृतीय अध्याय में मैंने पुष्टिमार्गीय कीर्तन साहित्य के प्रारम्भ और विस्तार का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। मैंने पाया है कि भक्ति मार्गों में भक्ति संगीत की कीर्तन प्रणाली पुष्टिमार्ग की ही देन है। केवल पुष्टिमार्ग में ही भगवद् सेवा वैदिक मंत्रों की जगह तत्कालीन लोक भाषा में (ब्रज भाषा में) कीर्तन पद गान द्वारा आज भी होता है जो अन्य किसी धर्म सम्प्रदाय में देखने को नहीं मिलती। पुष्टिमार्गीय कीर्तन साहित्य का अध्ययन करते हुए मैंने पाया कि साधारण दैनिक जीवन में भी संगीत की महता और लोक प्रियता सर्व विदित है। संगीत के स्वर हर प्राणी–पशु–पक्षी–मनुष्य सभी को वशीभूत करने की ताकत रखते है। विद्वानों का मत है–संगीत को सुनकर हम उस देश, जाति की सांस्कृतिक समृद्धि

का पता पा सकते हैं। प्रत्येक देश, जाति का संगीत वहाँ की जलवायु और वातावरण से प्रभावित होकर अपनी अलग विशेषता रखता है। निराशा, अवसाद, दुःख के क्षणों में तथा आशा, उल्लास, आकांक्षा की पूर्ति में भी स्वभाविक आह्लाद मन से प्रस्फुरित होकर संगीत के रूप में परिवर्तित हो जाता है जिससे आत्मिक सौन्दर्य का बोध होता है इसी से आगे चल कर शान्ति व परमानंद प्राप्ति का मार्ग भी संगीत ने मानव के लिए सुलभ बना दिया है। कृष्ण का चरित्र आदिकाल से ही परम आकर्षण का केन्द्र रहा है। श्रीमद् भागवत् इत्यादि के माध्यम से प्रस्फुरित हुई मधुर भक्ति के अंकुर जन–जन में फूट पड़े।

मानव का लौकिक प्रेम से अलौकिक ईश्वरोन्मुख दिव्य प्रेम ही अखिल विश्व के साहित्य और संगीत की कृतियों के अनन्य भावों तथा संवेदनाओं का कारण रहा है क्योकि इसीसे आस्था, स्थापित्व व आत्मिक शांति पाई जाती है।

यह सत्य है कि साहित्य और संगीत पृथक–पृथक भी सच्चे आनंद को प्रदान करने वाले है। बिना संगीत के काव्य तथा बिना काव्य के उत्कृष्ट कोटि के संगीत का सृजन तो हो सकता है किन्तु ऐसी अवस्था में एक के बिना दूसरा अपूर्ण सा ज्ञात होता है। साहित्य और संगीत कला अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखते हुए भी एक–दूसरे के पूरक रहे है। सुन्दर स्वरों में बद्ध संगीत के राग किसी भाषा, जाति या देश विशेष के गान न होकर सृष्टि के अमर संकेत होते हैं जो अपने माधुर्य के सहारे जड़–चेतन दोनों को आत्मविभोर व लीन कर देने की अपूर्व क्षमता रखते है। इस प्रकार अपने प्रेमाधिक्य से हृदयगत अनुभूति को संगीत और काव्य मय नव स्वर में झंकृत कर कृष्ण भक्ति कालीन कवियों ने संगीत और साहित्य के समन्वय की सुन्दर धारा को परम वेगवती कर दिया।

मैंने अपने अध्ययन से पाया है कि हमारे भारतीय संगीत कला के अंग–प्रत्यंग पर धर्म–आध्यात्मिकता की अमिष्ट छाप है। हमारे यहाँ संगीत का उच्चतम ध्येय आत्मा से परमात्मा का मिलन, परब्रह्म से शान्ति व मोक्ष की प्राप्ति का साधन रहा है। संगीत के स्वर मन को एकाग्र कर, हृदय की समस्त चंचल वृतियों को

केन्द्रीभूत कर भक्ति में तन्मयता व स्थिरता पाने में बड़े सहायक होते है। कालान्तर में विदेशी विजेताओं की संकीर्ण मनोवृति संगीत की प्रगति में बाधक हुई। भारतीय संगीत की पवित्रता और उसके आत्मिक सौन्दर्य को नष्ट करने के प्रयत्न हुए परन्तु भारतीय संगीत ने इस चुनौती को स्वीकार किया। जयदेव, गोपाल नायक, स्वामी हरिदास, इत्यादि संगीतज्ञ अवतरित हुए व अग्रस भी हुए। समय के साथ–साथ मुगल शासक अपेक्षाकृत सहिषुण निकले। इसी युग में उत्तरी भारत में भक्ति आन्दोलन ने ज़ोर पकड़ा जिसमें रामानंद, चैतन्य महाप्रभु, स्वामी हरिदास, हित हरिवंश, वल्लभाचार्य, सूरदास, तुलसीदास प्रभृति इत्यादि संतों व संगीतज्ञों ने संगीत की वह लोक पावन शाश्वत मंदाकिनी प्रवाहित की जिसमें योगदान देकर अनेक अगणित संत भक्त अमर हो गए और आज भी वह अपनी वाणी से जन मानस को पवित्र कर रहे है।

प्रेम के पुजारी भक्ति कालीन कृष्ण भक्त कवियों का चरम उद्देश्य अपने आराध्य देव की लीला और छवि का गान करना था। अपने इष्ट देव को रिझाने, भक्ति की तन्मयता में की गई अनुभूति को प्रकट करने के लिए इन भक्तों ने सुन्दर–सुन्दर पदों का गायन किया और दास्य, सखा, रति प्रभृति मनोभूमिकाओं में भावावेश में गाये गए ये पद ही अपने दिव्य साहित्यिक गुणों के कारण काव्य की संज्ञा से विभूषित हुए। कृष्ण भक्त कवियों ने अपनी विनय, अपनी अकिंचनता, अपनी सांसारिक प्रतारणाओं की वेदना, अपने आराध्य श्री कृष्ण का चरित्र महात्म्य, अपनी शरणागति की भावनाएँ, संगीत की सरसता के सहारे व्यक्त किए है। इन कृष्ण भक्त कवियों के काव्य में संगीत तत्व का विशिष्ट समावेश है। इन्होंने लोक और शास्त्रीय दोनों प्रकार के संगीत को अपनी भावना की अभिव्यंजना का माध्यम बनाया था। ये अनन्य कृष्ण भक्त काव्य गुणों से तो परिपूर्ण थे ही संगीत शास्त्र में भी पारंगत थे। संगीत के ठाठ में बँधा हुआ इन कृष्ण भक्त कवियों का काव्य आज भी हमारे अन्तः करण में आह्लाद भर आत्मिक प्रेरणा का एक नवीन संदेश भर देता है।

यधपि कुछ आलोचक विद्वानों का मत है कि इन कवियों ने जितना प्रयास अपने धार्मिक भावों की अभिव्यक्ति के लिए किया है उतनी दूर तक वे गेयत्व के लिए नहीं गए है। अपने अध्ययन से मैंने ये पाया है कि संगीत और काव्य की मर्मज्ञता तथा सच्चे भक्त की भक्ति–भावना को लक्ष्य कर ही कुम्भन, सूर, नंद– आदि भक्तों को वैष्णवाचार्यों ने अपना शिष्य बनाया था। कृष्ण भक्ति के प्रचार में इन भक्त कवियों के संगीत मय पदों ने जादू का काम किया। गायन, वादन और नृत्य (विशेषतः रासलीला) तीनों के सफल संयोग के द्वारा इन कृष्ण भक्त कवियों ने संगीत की परिभाषा को सार्थक कर दिया।

पुष्टिमार्गीय सेवा विधि के विधान में एक निश्चित क्रम और व्यवस्थित रूप में निर्धारित अष्टप्रहर की नित्य कीर्तन प्रणाली तथा वर्षोत्सव आदि की नैमितिक कीर्तन प्रणाली आज भी यथावत रूप से चल रही है। पुष्टिमार्ग के संस्थापक वल्लभाचार्य के पश्चात् उनेक पुत्र विट्ठलनाथ जी ने अष्टछाप की स्थापना कर पुष्टिमार्गीय कीर्तन संगीत को विश्व विख्यात बना दिया। पुष्टिमार्गीय वार्ता साहित्य से विदित है कि सम्राट अकबर जैसे कला प्रेमी और कलाश्रयदाता इन कृष्ण भक्तों के पद गायन सुनने के इच्छुक रहते थे। अकबर दरबार के नवरत्न में से एक तानसेन ने स्वामी हरिदास तथा अष्टछाप के गोविन्द दास से गान विद्या सीखी थी।

अन्तः यही कहना चाहूँगी कि हिन्दी साहित्य का मध्यकाल भारतीय कलाओं के विकास का स्वर्ण युग रहा है। कलाओं के अपूर्व समन्वय द्वारा भावों की जैसी सूक्ष्म तीव्रतम अभिव्यंजना हुई वह विश्व इतिहास में अन्यत्र देखने को बहुत कम मिलती है। अपने इष्ट की भक्ति की तन्मयता में काव्य गान के रूप में प्रकट होने वाले पद ही कृष्ण भक्ति कालीन हिन्दी साहित्य की अधिकांश निधि रहे है। हिन्दी साहित्य के मध्यकालीन भक्तों में सन्तों, धर्म प्रचारकों तथा लौकिक कवियों ने भी अपने भावो–विचारों को प्रेम और सौन्दर्य के साथ संगीतमयी वाणी में व्यक्त किया। कृष्ण भक्त कवियों के इस गेय काव्य से हिन्दी साहित्य ने अपने

उतराधिकार में यह ऐसी पैतृक सम्पति प्राप्त की है जिसका वह आज तक सदुपयोग करता चला आ रहा है। हिन्दी साहित्य के काव्य जगत् में तथा संगीत क्षेत्र में भी पुष्टिमार्ग के अष्टछाप कृष्ण भक्त कवियों का स्थान अवर्णनीय है। जो विश्व के अन्य साहित्य में भी विरल रूप से ही मिलता है।

४. चतुर्थ अध्याय :

अपने शोध प्रबन्ध के चतुर्थ अध्याय में मैंने पुष्टिमार्गीय साहित्य का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। यूं तो पुष्टिमार्गीय साहित्य संस्कृत, हिन्दी (ब्रज भाषा) और गुजराती में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है किन्तु यहाँ मैंने अपने शोध विषय के अनुरूप केवल पुष्टिमार्गीय हिन्दी (ब्रज भाषा) साहित्य पर प्रकाश डाला है। सर्व प्रथम पुष्टिमार्गीय हिन्दी साहित्य का आरम्भ मौखिक रूप से वल्लभाचार्य जी ने किया था बाद में अपने शिष्य सेवकों को ब्रजभाषा हिन्दी में अपने इष्ट श्री कृष्ण की लीलाओं के गान करने की प्रेरणा दी।

पुष्टिमार्गीय साहित्य केवल भक्ति–ज्ञान का ही वर्णन नहीं करता बल्की राष्ट्रीयता, स्वदेशीता, स्व–स्वतंत्रता, पुरातन ऐतिहासिक गौरव आदि अनेक सफल अवतरण प्रस्तुत करता है। पुष्टिमार्गीय साहित्य से उस काल के धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन की रूप रेखा सामने आती है। पुष्टिमार्गीय साहित्य चाहे गद्य हो चाहे पद्य हो उसका महत्व धार्मिक एवं साहित्यिक दोनों क्षेत्रों में है। पुष्टिमार्गीय साहित्य में समान्य जन मानस की अभिव्यक्ति की झलक मिलती है आत्माभिप्राय का यह प्रस्तुती करण पुष्टिमार्गीय साहित्य की विशेष उपलब्धि रहा है जैसे–वार्ता साहित्य में आचार्यों के शिष्य सेवकों का वृतान्त, भावना साहित्य में मनुष्य की आत्मिक भावनाओं का अपने इष्ट के प्रति वर्णन, वचनामृत साहित्य जो आचार्यों द्वार अपने शिष्य–सेवकों–भक्तों को दिए गए बोध वचन, इसके अलावा यात्रा विवरण, मुख्य ग्रंथों का टीका साहित्य साथ ही पद्य साहित्य भी है जो

मुख्यतः अष्टछाप द्वारा रचित है और विश्व साहित्य में आज उसका अवर्णनीय स्थान है।

पुष्टिमार्गीय साहित्य रचना में भी अनेक धर्मी–विधर्मी कलाकारों व कवि भक्तों ने आश्रय लिया है, अष्टछाप कवि गण के उपरान्त अन्य यवन कवि जैसे रसखान, अलीखान पठान, बीबी ताज, इत्यादि भी इस साहित्य के इतिहास का हिस्सा बन चुके है।

अपने पुष्टिमार्गीय साहित्य के अध्ययन से मैंने पाया है कि मुख्य पुष्टिमार्गीय गद्य साहित्य के रूप में वार्ता साहित्य का महत्व विशेष है। साथ ही भावना साहित्य, वचनामृत साहित्य व अन्य गद्य साहित्य का वर्णन भी प्रस्तुत किया है। इसके पश्चात् उस अष्टछाप पद्य साहित्य का विवरण प्रस्तुत किया है जिसके कारण आज हिन्दी साहित्य विश्व स्तर पर भी आदर व सम्मान प्राप्त करता है। मुख्यतः सूरदास का पद्य साहित्य आज विश्व विख्यात है जो हिन्दी साहित्य को पुष्टिमार्गीय साहित्य की ही देन है। पुष्टि सम्प्रदाय के अष्टछाप के कवि हिन्दी साहित्य जगत के सर्वोच्च कोटि के कवि है जिनका प्रदेय विराट व अतुलनीय है।

अन्तः यही कहना चाहुँगी कि उपरोक्त परिचयात्मक विवरण से यह सर्वथा स्पष्ट हो जाता है कि तत्कालीन लोक भाषा--ब्रज भाषा को माध्यम बना कर जो साहित्य पुष्टिमार्ग ने हिन्दी साहित्य जगत् को दिया वो अवर्णनीय है। इसका यथार्थ यही है कि आज भी इस पुष्टिमार्गीय साहित्य का यथोचित परीक्षण हिन्दी जगत् के महानुभावों व विद्वानों द्वारा अविरल रूप से किया जा रहा है।

५. पंचम अध्याय :

अपने शोध प्रबन्ध के पंचम अध्याय में मैंने पुष्टिमार्ग के प्रमुख रचनाकारों का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया है। इतिहास का एक दौर जो भक्तिकाल के नाम से जाना जाता है, इसी युग में पुष्टि सम्प्रदाय का स्थान सब से ऊँचा रहा है। इसी युग में 'संतों–महात्माओं–आचार्यों' ने 'सीकरी' को अपने आत्म त्याग के

बल पर चुनौती दी थी। इन भक्त जनों के जीवन का वास्तविक ज्ञान बहुत गहरा था।

पुष्टिमार्ग के आचार्यों व भक्तों ने भारतीय धर्म, संस्कृति और साहित्य को अभिनय उँचाईयाँ प्रदान की है। पुष्टिमार्ग की स्थापना करने वाले परम वंदनीय महान् विभूतिओं के परम पावन जीवन चरित्रों से हमें एक दिव्य संस्कृति व पुनीत धर्म भावना की झाँखी देखने को मिलती है। पुष्टिमार्ग के मुख्य आधार स्तम्भ के समान इन महानुभाव आचार्यों व भक्त कवियों ने कला प्रचार के माध्यम द्वारा हमारी भगवद् भक्ति की रसिकता व सुकुमारता की सच्ची प्रतीति करवाने वाले रहे है। पुष्टिमार्ग के आचार्यों ने तत्कालीन विदेशी शासकों से अपने हिन्दुत्व की रक्षा के लिए लोहा लिया और कई कष्ट उठाए।

पुष्टिमार्ग के स्थापक वल्लभाचार्य ने अपने अदम्य साहस एवं अपूर्व कौशल से दिल्ली के सुलतान सिकन्दर लोदी की मजहबी तानाशाही के जुल्मों से ब्रज वासियों की रक्षा की ओर उन्हें अपने सहज–सुलभ भक्तिमार्ग की ओर आकर्षित किया व सहस्त्रों लोगों को अपने सम्प्रदाय में दीक्षित किया। वल्लभाचार्य के पुत्र गोपीनाथ जी ने भी सम्प्रदाय व साहित्य की उन्नति में अपना योग दिया। वल्लभाचार्य के द्वितीय पुत्र गुसाँई विठ्ठलनाथ जी ने अकबर की सहिष्णुता व योग्यता तथा कार्य कौशल से पुष्टि सम्प्रदाय को राग, भोग और शृंगार का विशद् रूप प्रदान किया। गुसाँई जी के चतुर्थ पुत्र गोकुलनाथ जी ने भी पुष्टि सम्प्रदाय की उन्नति में अपना सर्वस्व स्वाहा कर, माला–तिलक प्रसंग में सम्राट जहाँगीर के समक्ष उपस्थित होना पड़ा। गोकुलनाथ जी की सुझ–बुझ से यह प्रकरण दोनों ओर की सहिष्णुता से शान्तिपूर्वक निपट गया। गोकुलनाथ जी के पौत्र हरिराय जी के समय में औरंगजेब के भीषण अत्याचार हो रहे थे इस कारण हिन्दू आराध्यों की प्रतिमाओं को ब्रज प्रदेश से हिन्दू राज्यों की ओर ले जाना पड़ा था। हरिराय जी ने भी इस बीच भारत भ्रमण कर अपने पुष्टि सम्प्रदाय का प्रचार प्रसार किया।

अन्तः उपरोक्त पुष्टिमार्गीय आचार्यों ने अपने सम्प्रदाय का विस्तार कर, साहित्य निर्माण कर, तत्कालीन क्रुर शासकों के असीम अत्याचारों से हिन्दू जनता को उभारा। अतः इन महान गोस्वामी आचार्यों के व्यक्तित्व, कृतित्व से अवगत होना प्रत्येक हिन्दू का पावन कर्तव्य है। इसी दृष्टि से इनका संक्षिप्त जीवन चरित्र मैंने इस अध्याय में प्रस्तुत किया है।

पुष्टिमार्ग के अन्य मुख्य रचनाकारों में अष्टछाप का स्थान उच्चा है। पुष्टिमार्गीय वार्ता साहित्य से इन अष्टछाप कवियों की जीवन घटनाओं के बारे में वर्णन मिलता है। अष्टछाप के आठों महानुभावों का व्यक्तित्व त्रिआयामी रहा है– भक्त, कवि और संगीतज्ञ । पुष्टि सम्प्रदाय में की गई अष्टछाप की स्थापना अपने आप में इतिहास है जिसका प्रदान चाहे सम्प्रदाय हो, संगीत व साहित्य क्षेत्र में हो उसे विस्मृत नहीं किया जा सकता। तत्कालीन राजा–महाराजा, अन्य संत–महात्मा–भक्तों ने भी इनका यथोचित सम्मान किया था। यधपि आज भी यथार्थ माहिती के अभाव में उपरोक्त महानुभाव गोस्वामी आचार्यों व मुख्य भक्त कवियों की जीवनी सम्पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं हो पाई है। तथापि अपने समय में जन–साधारण का उचित मार्ग दर्शन कर इन महानुभावों ने अपनी सहृदयना का परिचय दिया है।

६. षष्ठ अध्याय :

अपने शोध प्रबन्ध के षष्ठ अध्याय में मैंने पुष्टिमार्गीय हिन्दी कृतियों का साहित्यिक मूल्यांकन प्रस्तुत किया है। अपने अध्ययन से मैंने पाया है कि ब्रजभाषा हिन्दी के गद्य और पद्य का व्यवस्थित रूप हमें पुष्टिमार्गीय हिन्दी कृतियों में ही प्राप्त होता है। पुष्टि सम्प्रदाय ने ही वार्ता साहित्य के द्वारा एक सर्वधा नवीन गद्य विद्या का आरम्भ किया जिसमें आगे चल कर भावना साहित्य, टिका साहित्य आदि को भी समृद्ध किया। पद्य विद्या में भी कीर्तन साहित्य से ब्रजभाषा को काव्य के क्षेत्र में अत्यन्त सम्पन्नता प्रदान की। काव्य में 'भ्रमर गीत' परम्परा का आरम्भ भी पुष्टिमार्ग की ही देन है इसमें सूर और नंद दास की भ्रमर गीत परम्परा अपने

आप में अद्वितीय साहित्य रहा है जिसका लोहा हिन्दी साहित्य जगत् के विद्वानों ने माना है। इसके अलावा पुष्टिमार्गीय पद्य साहित्य में नवधा भक्ति के सभी रूपों का वर्णन मिलता है जो तत्कालीन अन्य भक्त कवियों में इतनी विपुल मात्रा में उपलब्ध नहीं है। अभिव्यंजना शिल्प, भाव सबलता, कल्पना प्रवणता, भाषा माधुर्य, रस परिकल्पना सभी दृष्टिकोणों से पुष्टिमार्गीय पध कृतियों का मूल्यांकन उच्च कोटि का ही रहा है।

पुष्टिमार्गीय आचार्यों ने दार्शनिक सिद्धान्त के प्रतिवादन में जहाँ पांडित्य पूर्ण संस्कृत भाषा का प्रयोग किया है वही अपने पुष्टि सम्प्रदाय के साहित्य को जन–समाज तक पहुँचाने के लिए तत्कालीन लोक भाषा ब्रज बोली का सहारा लिया है तथा ब्रज बोली को साहित्यिक रूप प्रदान कर हिन्दी साहित्य जगत को गोरवान्तित किया है।

अस्तु यही कहूँगी की अपने शोध प्रबन्ध में प्रस्तुत कि गई लेखनी के आधार पर यह विश्वास से केह सकती हूँ कि पुष्टिमार्ग ने हिन्दी साहित्य जगत् को साहित्य, काव्य, कवि, दार्शनिक सभी विभूतियों से सम्मानित किया है। परम्परा और प्रयोग ये दोनों किसी भी कलाकृति के उपकरण कहे जा सकते है जिसका उपयोग कर मैंने अपने मौलिक विचार यहाँ प्रस्तुत किए है। और अपने शोध विषय–'हिन्दी साहित्य को पुष्टिमार्ग की देन' को भी उपयुक्त उदाहरणों द्वारा व्याख्यायित कर स्थापित किया है।

पुष्टिमार्ग की इतनी समृद्ध परम्परा होते हुए भी इसका व्यवस्थित इतिहास आज भी प्राप्त नहीं होता है। साथ ही पुष्टिमार्गीय आचार्यों की उदासीनता के अनुभव के कारण भी इस शोध प्रबन्ध को पूरा करने में मुझे अत्यन्त कठिनाइयों व संघर्ष का सामना करना पड़ा है।

मेरे शोध प्रबन्ध के कार्य को सुन्दर, सुचारु व व्यवस्थित रूप से सम्पन्न करवाने का श्रेय मैं अपनी निर्देशिका डॉ. शैलजा भारद्वाज को देती हूँ जिनके

ममत्वपूर्ण व्यवहार, महत्वपूर्ण सुझावों, विवेचनों, विचारों व मार्ग दर्शन की मैं अत्यन्त आभारी हूँ तथा आजीवन उनके आशीर्वाद की अभिलाषी हूँ।

साथ ही इन्दौर के महानुभाव विद्वान डॉ. गजानन शर्मा की मैं अत्यधिक अभारी हूँ जिन्होंने अपनी ज्ञान गरिमा की शीतल सुखद छाया में मुझे महत्वपूर्ण अध्ययन सामग्री, सहयोग व मार्ग दर्शन से कृतज्ञ किया। मैं डॉ. गजानन शर्मा की प्रेरणा व आशीर्वाद की आजीवन इच्छुक रहूँगी।

मेरे प्रोफेसर डॉ. विष्णु विराट चतुर्वेदी तथा डॉ. ओम प्रकाश यादव की भी में कृतज्ञ हूँ जिन्होंने अध्ययन सामग्री के साथ समय-समय पर मुझे अपना मार्ग दर्शन देकर मेरा हौसला बढ़ाया है।

अपने शोध प्रबन्ध के अध्ययन हेतु मैंने आणंद, अहमदावाद, नाथद्वारा, कांकरोली, इन्दौर व बड़ौदा का दौरा किया है। जिसमें कई प्रोफेसरों, विद्वानों व वैष्णवों ने मेरी सहायता की है। प्रो. नवनीत चौहाण (आणंद), प्रो. वीणाबेन शेठ (अहमदावाद), प्रो. कमला मुखिया व भगवती प्रसाद देवपुरा (नाथद्वारा), डॉ. रचना गौर (कांकरोली), वी.पी. परीख व परेश देसाई (बड़ौदा), जगदीश शास्त्री (खम्भात), जैमैश शाह (डीसा)-इन सभी महानुभावों की मैं अभारी हूँ।

कई संस्थाओं व पुस्तकालयों का भी मैने दौर किया जिनमें गुजरात विद्यापीठ (अहमदावाद), गुजरात युनिवर्सिटी लाइब्रेरी (अहमदावाद), भोलाभई लाइब्रेरी (अहमदावाद), वल्लभ सदन (अहमदावाद), हंसा मेहता लाइब्रेरी, ओरिएनटल लाइब्रेरी, सैन्ट्रल लाइब्रेरी (बड़ौदा), साहित्य मण्डल (नाथद्वारा), गुसाँई जी की बैठक (खम्भात), से मुझे आवश्यक पुस्तक सामग्री प्राप्त हुई है। इन सभी संस्थाओं व लाइब्रेरी के स्टाफ मेम्बर की भी मैं अभारी रहूँगी।

साथ ही विद्वानों की जिन कृतियों से मैंने सहायता ली है उनके प्रति भी मैं अत्यधिक कृतज्ञ हूँ।

पुष्टिमार्गीय महिला आचार्य गोस्वामी इन्दिरा बेटी जी के आशीर्वाद की मैं कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मेरा हौसला बढ़ाया व मुझे मार्गदर्शन दिया।

अपनी परम्परा व पारिवारिक वातावरण से प्रेरित होकर, मेरे माता–पिता की प्रेरणा से मैंने इस विषय को अपने शोध अध्ययन के लिए चुना था। अन्तः यही कहूँगी की अपने इष्ट 'श्री नाथ जी' के श्री चरणों में की हुई मेरी यह साधना शोध प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत है। और विद्वानों से सविनय निवेदन है कि मेरे इस प्रयास को स्वीकार करे तथा अज्ञानता से हुई त्रुटियों को उदार हृदय से क्षमा करें।

******